om 24 final Delhi_Page 1 and 2 18/03/2015 10:54 Page 6

इन आँखों ने क्या-क्या देखा

-ब्र.कु सूर्य, माउण्ट आबू

नई दिल्ली। नव निर्वाचित मुख्यमंत्री माननीय केजरीवाल को बधाई देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. उर्मिल, ब्र.कु. सविता, विधायक सोमनाथ भारती तथा अन्य।

दिल्ली-पाण्डव भवन। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. बृजमोहन, न्यायाधीश वी.ईश्वरैय्या, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

डुंगरपुर-राज.। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव ध्वज फहराने के बाद भाई-बहनों से स्थूल पदार्थों से अनासक्त रह सभी के प्रति शुभकामना एवं शुभभावना रखने की प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। महाशिवरात्रि महोत्सव में दीप प्रज्वलन के बाद ईश्वरीय स्मृति में क्षेत्रिय उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, बोर्ड एज्युकेशन के डिप्युटी सेक्रेट्री सूर्य नारायण साहू, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. माला तथा अन्य।

वोंगईगांव-असम। 79वीं शिव जयंती के पावन अवसर पर शिव ध्वज फहराते हुए असम कृषक मुक्ति संग्राम समिति के अध्यक्ष अखिल गोगोई। साथ हैं ब्र.कु. लोनी तथा अन्य भाई बहनें।

वीकानेर-राज.। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्मा शिव के लिंग रूप का पूजन करते हुए विधायक डॉ. गोपाल जोशी। साथ हैं ब्र.कु. कमल तथा अन्य भाई बहनें।

''इन आँखो ने देखा शिव को नया जहान बनाते भूमण्डल पर आ रूहों को, अमृत पान कराते''

सृष्टि चक्र में सतयुग से कलियुग तक मनुष्य ने अनेक दृश्य देखे। कभी वह देवी-देवताओं के आँचल में खेला, तो कभी उनके पूजन में मग्न रहा। कभी उसने सम्पूर्ण सुखमय स्वर्ण काल निहारा, तो कभी वसुन्धरा पर रक्त-सरिता बहते देखा। कभी उसने समस्त विश्व पर शासन किया तो कभी भारत में विदेशी शासकों की अधीनता देखी। मनुष्य असंख्य दृश्य अवलोकन करता हुआ अपनी लम्बी यात्रा तय करके उस दिव्य दृश्य के समक्ष आ पहुँचा है, जहाँ प्रभु स्वयं अपनी दिव्य लीलाएँ कर रहे हैं। जो कुछ शास्त्रों में पढ़ा, वो साकार है, जिसे देखने का इन्तज़ार था, वो सम्मुख है।

यों तो मनुष्य ने अनेक सुखदाई दृश्य देखे, परन्तु हम प्रभु के बच्चों ने इस अन्तिम जन्म में क्या-क्या देखा, यहां हम उन आँखो देखे दृश्यों का उल्लेख करेंगे। हमारे साथ वे अनेक आत्माएँ भी निशिदिन अपने सर्वोच्च भाग्य का गुणगान करती हैं जिन्होंने अनेक बार ये अलौकिक दृश्य देखे और जिनका मन इतना मुग्ध हो गया कि पुन: संसार में लिप्त नहीं हुआ।

हमने उस परम सत्ता को धरती पर उतरते देखा

अनगिनत बार हमने उस परम सत्ता, परमपिता को इस धरती पर उतरते देखा। हमने देखा कि वह परम सत्ता परकाया में प्रवेश करके मनुष्यों की कैसे जन्म-जन्म की प्यास बुझाते हैं। उसने इस धरा पर आकर अलौकिक यज्ञ रचा और हमने अनेक मनुष्य रूपी परवानों को उस यज्ञ में स्वाहा होते देखा। अनेकों ने अपना तन, मन, बुद्धि, धन व सर्वस्व उसमें स्वाहा कर दिया। और यहीं पर जीवनमुक्त स्थिति प्राप्त की। जो कल्पना का विषय था वो सत्य हो गया। जो तर्क का विषय रहा वो अनुभवों का खज़ाना बन गया।

प्यार के सागर को प्यार लुटाते देखा -

हमने उस प्यार के सागर में सैंकड़ों बार डुबकी लगाकर तो देखा ही परन्तु हमने उस प्यार के सागर को छलकते भी देखा और उसकी छलक से अनेक प्यासी आत्माओं को तृप्त होते भी देखा। इन नयनों से देखा कि भगवान के भी अपने प्यारे वत्सों के प्रेम में नयन छलक जाते हैं। हमने उन्हें रूहों के नयन पोंछते भी देखा और प्यार की दृष्टि देकर संसार भुलाते भी। कितनी भाग्यशाली हैं वे आत्माएँ जिन्होंने प्रभु का साक्षात् प्यार देखा! जिन्हें उन्होंने कृत्य-कृत्य कर दिया। भक्त तो भगवान के प्रेम की एक-एक बूँद के लिए चातक रहे परन्तु हम प्रभु-सन्तान तो उसके पुनीत प्यार का निशिदिन रसास्वादन करते हैं। इतना ही नहीं, हमने उसे अपने बच्चों को गले से लगाकर पुचकारते भी देखा और पल भर में रूहों के दर्द हरते भी देखा।

भगवान को गीता-ज्ञान देते देखा

जो कान युगों से प्रभु की सुखदायिनी, मन भावनी आवाज़, क्षण भर को सुनने के लिए प्यासे थे, उन्हीं कानों से हमने, मन को रस देने वाली, प्रभु के मुख से निकली वाणी घण्टों तक सुनी। भक्त जब सुनते हैं कि भगवान ने स्वयं गीता ज्ञान दिया था तो वे सोचते हैं कि काश! वे भी प्रभु से गीता-ज्ञान सुन पाते। परन्तु वह कल्पना अब साकार है। ब्रह्मा-वत्स रोज़ उन्हें गीता-ज्ञान सुनाते हुए देखते हैं। इन आँखों द्वारा हमने ज्ञान-सागर को ज्ञान के सम्पूर्ण रहस्य खोलते देखा। रचयिता व रचना के गुह्य राज़ स्पष्ट करते हुए देखा। अपने वत्सों के समक्ष तीनों लोकों व तीनों कालों के गूढ़ रहस्य समझाते देखा। जबकि एक काठ की वीणा भी मनुष्य के मन को मुग्ध कर देती है, तो भगवान की ज्ञान-वीणा मनुष्यों के मन को कितना मुग्ध करती होगी! लोग कहते हैं कि उसने प्रेरणा से ज्ञान दिया परन्तु हमने तो उसको सम्मुख ज्ञान देते हुए देखा। हमने उसे मुक्ति व जीवनमुक्ति का सत्य पथ दर्शाते भी देखा तो पुरातन मान्यताओं को निराधार बताते भी देखा।

प्रभु को नव-युग रचते देखा

सृष्टि-रचना के बारे में प्रचलित अनेक दर्शनों को असत्य सिद्ध करते हुए हमने इन आँखों से देखा कि भगवान नवयुग का निर्माण कैसे कर रहे हैं। लोग कहते हैं कि उसने सूर्य, चाँद, तारे, ग्रह, पृथ्वी व फिर मनुष्य बनाये, परन्तु हमने देखा कि उसने मनुष्य को देवता कैसे बनाया। कैसे उसने कीटसम मानव को पारस तुल्य बनाया। कैसे उसने मनुष्यों के मन के काँटों को चुन-चुन कर उन्हें दिव्यता प्रदान की। हम अब भी साक्षात् देख रहे हैं कि वे परम प्रभु कैसे नवयुग का निर्माण कर रहे हैं।

भगवान को शक्ति-सेना तैयार करते देखा -

रावण को पराजित करने के लिए, माया के साम्राज्य का सफाया करने के लिए उस सर्व शक्तिवान ने कैसे अपनी सेना तैयार की, यह इन नयनों से प्रत्यक्ष देखा। कमज़ोर नर-नारियों में ज्ञान-योग के बाण भरते हुए, उनकी कमज़ोरियों को बार-बार नष्ट करते हुए, उन्हें विजय का तिलक लगा कर युद्ध-क्षेत्र में भेजते हुए हमने उस महान सत्ता को देखा। हमने देखा कि भगवान ने किस तरह अपनी शक्ति सेना को सुसज्जित किया। उनमें आत्म-विश्वास जागृत किया। हम शक्ति सेना व रावण की सेना का युद्ध भी देख रहे हैं और यह भी देख रहे हैं कि रावण सेना पराजित होकर पीछे हट रही है और शिवशक्ति सेना विजय का नगारा बजाते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। हम प्रतिदिन उस परम सत्ता को अपनी सेना की मार्ग प्रदर्शना करते हुए देखते हैं।

भगवान को रूहों को धीरज देते देखा -

हमने देखा कि भगवान अपने प्रिय बच्चों के प्यार में सारी-सारी रातें बैठकर बच्चों की करुण कहानियाँ कैसे सुनते हैं। और उन्हें गले से लगाकर धीरज कैसे देते हैं। अनेक रूहों के दु:ख की गाथाएँ सुनकर उनके दु:ख निवारण करते देखा! हमने देखा कि वे प्यार के सागर बिगड़ी को बनाने वाले, आत्माओं की जन्म-जन्म की प्यास बुझाने के लिए किस प्रकार उनके भारी दिल को हल्का करते हैं। उनकी हर बात सुनकर समा लेते हैं। उस क्षमा के सागर को रूहों के पाप क्षमा करते हुए भी देखा और दया-निधान का दयालु स्वरूप भी देखा।

भाग्य विधाता को भाग्य बाँटते हुए देखा -

हमने देखा कि वह अवढर दानी भोलानाथ सर्व खज़ाने बाँटने धरती पर आते हैं। और रूहों के समक्ष सब कुछ लुटा देते हैं। परन्तु कोई कुछ लेता है और कोई कुछ! सुना था कि कभी भगवान ने भाग्य बाँटा था। परन्तु कैसे बाँटा, वो अब हमने देखा। और हमें भी उसने मास्टर भाग्य विधाता बनाकर सर्व खज़ानों से भरपूर कर दिया। वह अब भाग्य बाँट रहे हैं, जो चाहो ले लो।

उस बागवान को चेतन पुष्पों में सुगन्ध भरते देखा -

हम आत्माएँ उस परम बागवान के चेतन बगीचे के चेतन पुष्प हैं। हम पुष्पों से पँखुड़िया सूख-सूखकर गिर रही थीं, कोई भी हमें पानी देने वाला नहीं था। सुगन्ध, दुर्गन्ध में परिणित हो चुकी थी। ऐसे में वह बागवान पुन: आया और हमने देखा कैसे वह एक-एक पुष्प में दिव्य सुगन्धी भरता जा रहा है। तथा एक-एक पुष्प की अलौकिक सुगन्ध से समस्त विश्व महक उठेगा और विकारों की दुर्गन्ध सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

दिव्य-दृष्टि दाता को दिव्य-दृष्टि देते हुए देखा -

भक्त तो क्षणिक दर्शन को तरसते हैं परन्तु हमने देखा कि वो दिव्य दृष्टि का विधाता अनेक आत्माओं को दिव्य दृष्टि का वरदान देकर सम्पूर्ण अलौकिक साक्षात्कार करा रहे हैं। जो अब तक रहस्य थे, वे सब साक्षात् हो गये। कितनी महान हैं वे आत्माएँ जो यहीं पर बैठे स्वर्ग के व तीनों लोकों के दृश्य देख सकती हैं। जो अप्रत्यक्ष था, वो सब प्रत्यक्ष देखा।

इन नयनों ने अनेक रूहों को भगवान के नयनों का नूर बनते भी देखा और अनेकों को प्रभु से दिव्य प्रकाश प्राप्त करके समस्त विश्व को प्रकाशित करते भी देखा। इन नयनों ने ज्ञान सागर से ज्ञान गंगाओं को जल भरते भी देखा और ज्ञान-सरिताओं को सागर से मिलने के लिए प्रवाहित होते भी देखा। धन्य हैं वे आत्माएँ जो भगवान के बच्चे बने और जिन्होंने भगवान को अपना बना लिया, जो उसके प्यार के व पावन दृष्टि के अधिकारी बन गये और जिन्हें भगवान ने स्वयं कहा कि ''तुम मेरे हो''।

हमने अनेक रूहों को प्रभु की असीम छत्र छाया में परम आनन्द व अतीन्द्रिय सुख पाते भी देखा। और प्रभु मिलन का परम आनन्द पाकर ईश्वरीय प्रेम में जगत से विरक्त होते भी देखा।

हम अब भी देख रहे हैं कि अनेक आत्माएं जो कि बहुत काल से अपने प्यारे परम पिता से बिछुड़ गई थीं, दौड़ी-दौड़ी आकर मिलन मना रही हैं। और अनेक आत्माएं पुन: अपना श्रेष्ठ भाग्य निर्माण कर रही हैं। प्रभु अखुट खज़ाने बाँट रहे हैं, कोई अपनी झोलियाँ भर